मान्यवर,

मैं आपकी सेवा मे अपनी लिखी हुई काव्य पुस्तक 'रुक्मणी हरण' भेज रहा हूँ। इस पुस्तक की भाषा व विषय पुरानी शैली का है। महा विद्यालयो मे यह पाठ्य पुस्तक काम देवे यही सोचकर यह लिखी गई है। मुझे आशा है कि आप इसका अवलोकन करके अपनी राय अवश्य देगे कि मुझे कहाँ तक इसमे सफलता मिली है। भाषा, अलंकार व अन्य काव्य दोषो पर आप के विचार से मुझे अधिक सहायता मिलेगी।

आपका कृपाकाँक्षी

उमाशङ्कर नायक

सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ फार्मस आफ एच० एच०

पोस्ट—अजैगढ़, जिला—पन्ना (म० प्र०)